लोक कथाओं में आग्रोहा

आग्रोहा एक वीर भूमि

प्राचीन समय में अग्रसेन नामक एक युवक प्रताप नगर का राजा बना। वह अपने पिता को पिंडदान करने 'लोहार्गल' तीर्थ स्थान जा रहा था। उसके साथ हाथी, घोड़े ,पैदल नौकर – चाकर, बाजे वालों की भीड़ चल रही थी। मार्ग में भयंकर जंगल आया। जंगली पशुओं को मार्ग से दूर रखने के लिए बाजे जोर से बजाए गए। जंगल के बीच मार्ग के निकट एक सिंहनी प्रसव वेदना के कारण एक करील की छाया में बैठी थी। अग्रसेन, जिस हाथी पर सवार थे, वह हाथी जब इसी करील के पेड़ के पास आया, तब हाथी, घोडा, बाजों की आवाज से सिंहनी का गर्भ गिर गया। नवजात सिंह – शिशु ने क्रोधित होकर राजा के हाथी पर आक्रमण किया और काल के गाल पर समा गया। राजा अग्रसेन को लगा कि वह स्थान वीर भूमि है। यहां मात्र पैदा हुआ सिंह शिशु भी हाथी पर आक्रमण करने का साहस कर सकता है। अतः उसी स्थान पर एक नगर बसा कर उसे अपने राज्य की राजधानी बनाई। भाटों के गीतों में इस नगर आग्रोहा का वर्णन इन शब्दों में किया गया है–

'बाय बनी चौबीस, ताल छत्तीस बंधाए।
कूप तेरह सौ साठ, ता ऊपर फिरत दुहाई
चार किले चौफेर,बने षोडस दरवाजे
हाट छप्पन हजार, बाजे छत्तीसों बाजे
सवा लाख घर शहर में, बसता ऊपर स्थित रहे
राजा अग्र बसायो अग्रोहा एताकाम त्रेता किया।'

अग्रोहा का बंधु प्रेम

महाराजा अग्रसेन के समय अग्रोहा एक सुन्दर एवं वैभवशाली नगर था। इस नगर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं था। महाराजा अग्रसेन ने गरीबी दूर करने की एक अद्‌भुत प्रथा अपने राज्य में शुरू की थी। आज भी अग्रवाल और अग्रोहावासी इस प्रथा का गर्वपूर्वक वर्णन करते हैं।

अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन के समय एक लाख परिवार रहते थे। सभी समृद्धशाली थे। यदि कोई परिवार अन्य स्थान से आकर अग्रोहा में रहना चाहता तो अग्रोहा का प्रत्येक परिवार एक ईंट और एक मुद्रा (सिक्का) आने वाले को भेंट करता था। इससे नवागंतुक परिवार एक लाख ईंटों से भव्य भवन बना कर रहने लगता तथा एक लाख मुद्राओं से प्रतिष्ठित व्यापार करने लगता। विश्व में बंधुत्व का ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता। प्राकृतिक आपदा या व्यापार में हानि के फलस्वरूप भी यदि कोई गरीब हो जाता, तब भी अग्रोहावासी इसी प्रकार सहायता करते।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार बुकानन ने लिखा है – इस नगर में यदि कोई गरीब हो जाता था तो बाकी सब उसे पांच रुपए नगद और एक ईंट सहायता में देकर अपने बराबर कर लेते थे। ऐसा था अग्रोहा का बंधु प्रेम एवं समाजवाद।

लक्खी तालाब की कथा

आग्रोहा में लक्खी तालाब का उल्लेख मिलता है। आजकल जहां शक्ति सरोवर है, कहते हैं, किसी समय वहां विशाल लक्खी तालाब फैला हुआ था। इस सम्बंध में एक कथा प्रसिद्ध है कि उस समय सेठ

हरभजशाह नामक एक व्यापारी अग्रोहा के पास रहता था। उसने यह घोषणा करवा रखी थी कि कोई भी व्यक्ति लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर उससे ऋण ले जा सकता है, जब इसकी जानकारी लक्खी नामक बंजारे को मिली तो उसने मन ही मन सोचा कि परलोक को किसने देखा है ? बड़ा ही मूर्ख सेठ मिला है और उसने परलोक में भुगतान की शर्त पर सेठ से एक लाख रुपये का ऋण ले लिया किन्तु कुछ ही समय बाद उसे अपने आप पर ग्लानि होने लगी उसने अनुभव किया कि इतना बड़ा सेठ मूर्ख नहीं हो सकता जरूर इसके पीछे कोई रहस्य है और वह सेठ से लिए ऋण को चुकाने के लिए तुरन्त उनके पास पहुंच गया, किन्तु सेठ जी ने परलोक की शर्त पर ऋण भुगतान किए जाने के कारण उसे जमा करने से मना कर दिया। इससे बंजारे का दुख और भी बढ़ गया।

वह सेठ जी के ऋण को लेकर पागल सा हो गया तथा जगह – जगह घूमने लगा। एक दिन उसकी भेंट एक सन्यासी से हुई तो उसने उनसे ऋण मुक्ति का उपाय पूछा। सन्यासी ने उसे एक युक्ति बताई और अग्रोहा में हरभज शाह के नाम पर एक तालाब बनवाने की सलाह दी। तलाब तैयार हो गया। लोग पानी भरने के लिए उस तालाब पर आने लगे, किन्तु लक्खी बंजारा किसी को भी पानी न भरने देता और यह कहता कि खबरदार यह सेठ हरभज शाह का तालाब है उनकी अनुमति के बिना कोई पानी नहीं भर सकता। यह बात फैलते – फैलते हरभज शाह तक भी पहुंची तो उसने बंजारे से इसका कारण पूछा। बंजारे ने सम्पूर्ण घटना बता दी और कहा कि जब तक आप मेरा ऋण जमा नहीं कर लेते तब तक इस तालाब के जल का कोई भी उपयोग नहीं कर सकेगा।

हरभज शाह को उसकी बात समझ में आ गई। उन्होंने बंजारे का ऋण अपनी बही में जमा कर उसे जन साधारण के लिए खोल दिया, तभी से इस तालाब का नामकरण लक्खी बंजारे के नाम पर हो गया। कहा जाता है कि यह वही स्थान था, जहां आजकल अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा निर्मित शक्ति सरोवर है। इस सरोवर का अत्यंत ही महत्व है और इसके जल में स्नान करने से बड़े ही पुण्य की प्राप्ति होती है और नाना प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। इसी कारण यहां अमावस्या, पूर्णिमा आदि महत्वपूर्ण पर्वों पर स्नानार्थियों की भारी भीड़ जुटती है।

- **डॉ शिवशंकर गर्ग**